डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-२९

मित्र सुग्रीव-१

वैदिक संस्कृतिमें सूर्यको मनुष्यका मित्र माना गया है। सूर्य जीवको जगाता है। रोशनी और ताप देता है, बारिस बनाता है, अनाज़ पैदा करवाता है। सूर्य सबका मित्र है, लेकिन वह हमारा साथ नहीं दे सकता, हमें आपदसे नहीं उठा सकता!

मित्रता समाजसे बनती है। मित्र जीवनके साथी बनते हैं, कभी जिन्दगीमें काममें आते हैं। मनुष्य लेकिन सृष्टिमें अकेला है। हम अपना श्वास खुद ही लेते हैं, अपना खाना खुदको खाना होता है, और हम खुद ही मरते हैं। प्रकृतिके कारणसे दो मनुष्य अलग-अलग होते हैं, एकका दूसरेसे मिलना आसान नहीं है। हमारे मातापिता बचपनमें हमारे मित्र जैसे होते हैं। परन्तु आगे बढकर हम उनसे बिछुड़ जाते हैं, अपना घर बसाते हैं। विद्यालयमें हमारे कई मित्र बनते हैं, तो जिन्दगी भर नहीं टिकते! शादी हो जाती है, लेकिन शादीसे मित्रता बनाना या बनना अपनी सौभाग्यकी बात होती है!

वाल्मीकिकी रामायणमें सुग्रीवका प्रवेश मित्रताका संदेश लाता है। सीताजी खो गयी है, रामजी जंगलमें घबराते हुए घूम रहे हैं। उनको यह मालूम हुआ है कि सीताजीको दक्षिणकी ओर ले जाया गया है, लेकिन इस तरफ कुछ और इशारा नहीं है। लक्ष्मणजी उनके साथ हैं, पर वह लाचार हैं। अपने मनस्तापसे बात नहीं करते। इस हालतमें आदमीको सहारा चाहिये! समस्यामें खो जाना है या समस्या सुधारना है? एक मित्र चाहिये!

वैदिक संस्कृतिमें सूर्यको मनुष्यका मित्र माना गया है। सूर्य जीवको जगाता है। रोशनी और ताप देता है, बारिस बनाता है, अनाज़ पैदा करवाता है। सूर्य सबका मित्र है, लेकिन वह हमारा साथ नहीं दे सकता, हमें आपदसे नहीं उठा सकता! श्रीमद्भागवतमें वायुको मित्रका स्थान दिया गया है। हमारे साथ घूमता है, हमारे साथ रहता है, हमें छोडता नहीं है! लेकिन वायु अपनी खोई हुई चीज़ वापिस नहीं ला सकता, हमारे मनको शांति नहीं दे सकता।

वाल्मीकिके रामायणमें सुग्रीव सूर्यका वंशज है, उसका औरस पुत्र समझा जाता है। रामजी के भी सूर्यवंशमें पैदा

होनेका विवरण है। हम यह नहीं कह सकते कि मित्रता किसी पुराने रिश्तेका बीज है, जो दो प्राणियों के बीच उगता है! रामायणमें सुग्रीव समझता है कि उसकी और रामजीकी पत्नीको किसीने बलात् कैद कर रखा है। दोनोंका स्वार्थ एक ही है! सुग्रीव रामजीसे अपनी मित्रताकी डोर बढाता है और अग्निको साक्षी रखकर मित्रता स्वीकार करवाता है।

सुग्रीवको पता था कि कोई भी आदमीके ऊपर पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता। वह समझता था उसकी

अपनी बात पक्की थी, हिलनेकी नहीं। हम यह नहीं बता सकते कैसे वाल्मीकि ने वानर सुग्रीव को इतना चरित्रवान बनाया। वाल्मीकिके वानर चतुर, धीमान और कुशली होते हैं, बल्कि उनकी आकृति और शरीर मांकड़ सा होता है। टाँग पसारकर दूर तक छलांग मारना वानरको आसान था।

सबसे मज़ेकी बात यह है कि वाल्मीकिके वानर मनुष्य जैसे अपनी भाषामें भावना प्रगट कर सकते थे। वाल्मीकिके सभी चरित्रोंमें, पशु भाषा शामिल है। पशुभाषा इंगित और मुँहके भावसे बनती है। संसारमें अनेक लोग होते हैं जो पशुभाषाको पढ़ सकते हैं और समझ सकते हैं। वानरोंका अभाव यह है कि उनकी ऊंगलियाँ पूरी बनी नहीं होती, वे हथियार नहीं बना सकते। हथियारसे संहार करनेवाला मनुष्य ही होता है!

किसी गुफामें अपने बड़े भाई बालीको मरा हुआ समझकर सुग्रीव ने खुदको किष्किन्धाका राजा बना लिया था। बाली ने गुफासे निकलकर सुग्रीवको धड़काया और उसको राज्यसे निकाल दिया। सुग्रीवकी पत्नी रुमा को उसके साथ छोडा ही नहीं - सुग्रीवको मारने चला। थोडे वानरोंके साथ सुग्रीव डर के मारे भागता रहा। कुशली हनुमान ने उसका साथ दिया। उन सभी ने ऋषि मतंग के आश्रम के पास ऋष्यमूक पहाड़ पर अपना ड़ेरा डाला। कुछ कारणसे मतंग ऋषिसे बालीको घोर भय था ।

जंगलमें दानव कबन्ध ने रामजीको वानर सुग्रीवसे सहारा लेनेका संदेशा दिया था। सुग्रीवका ड़ेरा कबन्धको पता था। राम और लक्ष्मण चलते-चलते पम्पा ह्रदके किनारे आ पहुँचे और ऋष्यमूक पर्वत भी नज़रमें आया। पर्वतके ऊपरसे सुग्रीव ने भाइयोंको ठहरा देखा और उनके हाथमें धनुष देखकर कातर हो उठा। 'बालीने किसी मनुष्यरूपी गुप्तचर भेजा है! मुझे ड़र लग रहा है! हनुमान, पता करो ये है कौन ?'

'यह नज़ारा करो कि वे दोनों कैसे बोल रहे हैं - उनके मनमें संतोष है या अवशोष है ? इधर-उधर पूछके उनका ज़ेरा लगाओ, उनके दिलकी बात सुननेकी कोशिश करो। हाँ, जब उनसे बात करो तब मेरी तरफ देखते रहना ताकि मैं तुम्हारे मुँहको देख सकूँ! उनको यह पूछो कि जंगलमें आनेका मतलब क्या है। परख लो - सच्चे हैं या खोटे!' मुँहको देखकर समस्या समझना सुग्रीवकी कलाओंमें था। आगेकी कथामें उसका यह गुण रामजीके लिये काफी मददग़ार साबित होता है।

रामजीसे हनूमानका मिलन कुछ नैसर्गिक कहानी है - इसकी चर्चा हम आगे करेंगे। हनूमान राम और लक्ष्मणसे मिला और सुग्रीवके बताये हुए तरीकेसे मिलाप करवाया। उसने अपने मनमें तय कर लिया कि दोनों भाई शरीफ़ हैं। तो फिर दोनोंको कन्धेपर सवार कर हनूमान सुग्रीवके पास आ पहुँचा और अपना सारा सुझाव सुग्रीवको बता दिया।

सुग्रीव ने अपनी वेशभूषा सजाके दोनों भाइयोंका स्वागत किया। उनकी बुनियाद और अच्छापन उसने हनूमानसे पता कर लिया था। 'हनूमानने मुझे आपकी धार्मिकता, स्वभाव और तपसकी जानकारी दी है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं आपकी सेवा कर सकता हूँ। मेरे जैसे वानरको आप जो मित्र बनाना चाहते हैं, इससे मैं आभारी हूँ। अपना हाथ मेरी तरफ पसारिये और हाथके जोड़से हमारी मित्रताका ड़ोर मज़बूत हो जाय!' सुग्रीव ने रामजीका हाथ पकड़ लिया और फिर उनको आलिंगन किया।

बालीसे सुग्रीवका भय हनूमान जानता था। हनूमानको मालूम था कि द्वन्द्व युद्धमें बाली सुग्रीवको खत्म कर सकता था। रामजीके धर्म और वीरत्वके वारेमें उसने पहले पता कर लिया था। जल्दीसे उसने लकड़ी इकट्ठी कर एक अग्निकी प्रस्तुति की और उसे फूलसे सजाकर थोड़ा महत्वपूर्ण बना दिया। सुग्रीवने रामजीके साथ अग्नि प्रदक्षिण किया और अपनी मित्रताका स्वागत किया। यह पता नहीं है कि ऐसा संस्कार उस जमानेकी सामाजिक विधि थी या सुग्रीव रामजीके मतलब की परीक्षा लेना चाहता था!

सुग्रीव बोल पड़ा- 'आजसे हम दोनों मित्र बन गये! अब हमारा लक्ष्य एक है! हमारा सुख और दुःख एक हो गया!' फिर उसने बगल में बैठकर रामजीको अपनी कहानी सुनाई। 'बालीने मुझे राज्यसे निकाल दिया है। मेरी भार्याको उसने बंधन बना रखा है। मैं इस पर्वतके ऊपर भय और आतंकसे समय बिता रहा हूँ। मुझे ऐसी विपत्तिसे निकलवा दीजिये! मुझे बालीके क्रोधसे मुक्त करवा दीजिये। ऐसा कीजिये ताकि मुझे बालीका आतंक न हों!'

सुग्रीवको पता था कि रामजीकी पत्नीको उद्धारनेके लिये वह मदद कर सकता था। लेकिन रामजीकी ताक़त पर उसका पूरा विश्वास नहीं था। वह जानता था बाली केवल हथियारसे मर सकता था, द्वन्द्व युद्धसे नहीं। राम और लक्ष्मणके हाथमें धनुष देखकर उसने मनमें सोच लिया था कि वे बालीको मारनेमें सफल हो सकते थे। उसने जल्दीसे यह मित्रता संस्कार करवाके अपना काम हासिल करनेका प्रयत्न किया।

रामजीके पास और कोई चारा नहीं था। वह पितृसत्य पालनेके लिये घरसे निकलकर वनवास कर रहे थे। उनकी पत्नीका अपहरण हुआ था। उनको पता नहीं था कि सीताजी जीवित हैं या नहीं। सुग्रीव उनका एक ही सहारा था। सुग्रीवकी बात सुनकर गंभीर आवाज़से रामजी ने सम्मति दे दी - 'मित्रताका प्रतिदान देना मुझे स्वीकार है। दुष्ट बालीको मैं मार डालूंगा। विषसे जड़े से हुए मेरे हजारों तीक्ष्ण अस्त्र उसको साँप जैसे काट डालेंगे! बाली पर्वत समान भूमिपर गिर कर तड़पता हुआ मर जायगा!'

सुग्रीव अपनी मनकी सोच सुन ली!■